



नमस्तान्ना साय मातुः प्रजु नः ॥ ॥ तमा तव लि दं ॥ ॐ हं कां गीं
रु वया न्नाय वलि गुरु स्वाहा ॥ ॥ ॐ हं वां वीं वूं वदू के ना थय वलि गुरु
स्वाहा ॥ ॥ ॐ हं यां यीं यूं या नि नी ली वा ली गुरु स्वाहा ॥ ॐ हं मं गां
गं गलं य नय वलि गुरु स्वाहा ॥ ॐ हं सर्व वि द्यु क ते य ४ सर्व त ते यो वलि गुरु
स्वाहा ॥ ॥ थम म धम स्वा न चा ता म ॥ ॐ हं मणि तां ग से न वा य वलि गुरु
स्वाहा ॥ ॐ हं न नू ले न वा य वलि गुरु स्वाहा ॥ ॐ हं व लु ले न वा य वलि गुरु
स्वाहा ॥ ॐ हं का थ ले न वा य वलि गुरु स्वाहा ॥ ॐ हं उ म ल ले न वा य वलि गुरु

स्वाहा ॥ ॐ हं क पा ली ग ले न वा य वलि गुरु स्वाहा ॥ ॐ हं ली व ल ले न वा य व
लि गुरु स्वाहा ॥ ॐ हं मं हा न ले न वा य वलि गुरु स्वाहा ॥ ॐ हं वा नू ली ले
न वा य वलि गुरु स्वाहा ॥ ॐ हं ना दि आ या त मं क थ न वि य ॥ थू य दी य जा
य स्वा ॥ नि धि ल नि धि क ल नि नू य म म ड ल नि वि का रं रु का रं दू का रं
व रु ड रु त व ह न य नू नी ड म म ल ल व रु का रं व दू ना गं उ कृ टि
न ट मू र्ख ले न वं गू न या नि स्व द्वा ने आ म नी ल उ म नू क म हि नं रु व या
नं न मा मि ४ ॥ प र्वा दि च रु दि गं ॥ ॥ ॥ ॥ आ न न ग कि य नि व दि न म नू
ग रु ग ल्या नू नू य म खि ल थ वि वा ध रु डी ॥ मू र्ख मं सा व न क रं य न म गी मं

नवत्वार्यनकर्तुं ॥ वास ॥ अत्र नागत्रय स्कात्र आसुर्वागपूजा ॥
तसु द्वि आत्मयुजार्क ॥ तवलिंद ॥ ॐ हूं कौं श्रीं हूं रुं सु छानं
गोलायवलिं गृह्णस्वाहा ॥ ॐ हूं वां वीं वूं वृहं नाथयवलिं
गृह्णस्वाहा ॥ ॐ हूं सां सीं मूं सर्वथा गिनी त्यावलिं गृह्णस्वाहा ॥ ॐ
हूं मं गां गूं गणयतयवलिं गृह्णस्वाहा ॥ ॐ हूं महानृद्रावनाय
वलिं गृह्णस्वाहा ॥ ॥ नववन्द्यसु ॥ ॥ ॐ हूं हूं रुं रुं कर्म हो ते न
वलिं गृह्णस्वाहा ॥ ॐ हूं विष्णु चक्र कर्ते नवायवलिं गृह्णस्वाहा ॥ ॐ

हूं अग्निवतान ते नवायवलिं गृह्णस्वाहा ॥ ॐ हूं अग्नि विष्णु महो ते नवा
यवलिं गृह्णस्वाहा ॥ ॐ हूं कालाक्ष महो ते नवायवलिं गृह्णस्वाहा ॥
ॐ हूं कोपाली महो ते नवायवलिं गृह्णस्वाहा ॥ ॐ हूं एकयादम
हो ते नवायवलिं गृह्णस्वाहा ॥ ॐ हूं श्रीमन्महो ते नवायवलिं गृह्ण
स्वाहा ॥ ॐ हूं हाटक महो ते नवायवलिं गृह्णस्वाहा ॥ ॐ हूं अचने महो
ते नवायवलिं गृह्णस्वाहा ॥ ॥ मध्यवलिभार ॥ ॐ हूं अग्नि तार्क ते नवा
यवलिं गृह्णस्वाहा ॥ ॐ हूं अत्र ते नवायवलिं गृह्णस्वाहा ॥ ॐ हूं चतुर्ते नवा

यवलिं गृह्णन्त्याह ॥ ॐ श्कायते न वायवलिं गृह्णन्त्याह ॥ ॐ उ म क ले
न वायवलिं गृह्णन्त्याह ॥ ॐ र क याली ग ले न वायवलिं गृह्णन्त्याह ॥
ॐ र ती व ग ले न वायवलिं गृह्णन्त्याह ॥ ॐ र म डार ले न वायवलिं गृह्णन्त्याह ॥
स्वाहा ॥ ॐ र बाल लो ले न वायवलिं गृह्णन्त्याह ॥ ॐ री से नां सादि ॥
ॐ रू अशाय ममाय वर द विमल मूव काली विच वलिं गृह्णन्त्याह
॥ ॐ रू क म नू व काली सादि वलिं दद ॥ ॥ ॐ रू अज न श्चय कू न
श्च ॐ रू अ वाय न मूहिका ॥ ॐ रू ग उ वा ल श्चय मूद न मे व

चम ॥ अ मू क क य श्च उपा द न क दी यु क ॥ ॐ रू ना व न उा या मू
श्च उा य श्च क क वा ह क ॥ अ क म्वा ह क म्ब ल श्च ख ल श्च म म्ब ल
था ॥ ॐ रू ला हा न श्च व च नु अ न्य क म्ब व ॥ ॐ रू ना या उा ला हा
ट का ना श्च य ह श्च व ॥ ॐ रू क यालि वा नू व श्च ट क लू क ॥ ॐ रू
म क र ति म क थ वि ना द न म्ब था ॥ ॐ रू ना ना ग क लू श्च य व लू रू ट
का न क ॥ ॐ रू वी न मि हा ट क दा श्च म म्ब ल म्ब ल म्ब ल ॥ ॐ रू ना ल व श्च ल
वा कू व ल ॥ ॐ रू क लू क ॥ ॐ रू ला हा ॥ ॐ रू ना क म्ब ल क ॥ ॐ रू ना क म्ब ल

॥ यं च जतिं कुरुतया लब्धं त्रयं वा ज्ञानमाप्नुत ॥ यं वा जतिं च महाकुरु
नि। धीयद्ममूर्तिमि ताशाचतुर्वी दूतया कुरुते नैव तालनल्लभितुं ॥ यथक्
जमु नृपयस्य सर्वकोशविन्द ॥ ४॥ अजलादिमहाकुरुतया कुरा नान्ननमोम ॥ ५
॥ ॐ हूं कां कीं कूं ॥ अजलादि कुरुतया लायेवर्ति गृह्णस्व ॥ ॐ हूं ज
नादिद्वर्ति ॥ ॥ ॐ हूं वलुघल्लमहानां ॥ इमं स्वीसमवना ॥ भिवतीयथमा
धारासा मालीगामहावना ॥ जयाचविजयाचिवमजितामयनाजिता ॥ महा
ल्लवविनयाकी ॥ काचाकागमाटका ॥ जानहारीचदं दुनी ॥ शुक्लभव

निष्करी गंगी नलीषली सु नायवना मी उ नालिका ॥ लीषनी वमहा
नया काला मूखी ग रथे वच ॥ विमो वीरु मिनी चिव यरुणी धूऊ ठी ग अ
॥ विवह मूर्धसिद्धि दुषी ॐ क्रा त रथे वच ॥ दू का नी ला सु नी दी घा धू
मार्क कल रु सिये ॥ मार्ग गा का क दू धी च ग धा विपु नी चो न की ॥ न
कसी घान नो दा च न का की वि श्व त्र यिणी ॥ जय क नी नो ड वी र लो गु क
गी न र रु ज नी ॥ वी व ल द म हा काली क काली वी कृ तान न ॥ को ट ला ली
महा दा च वा य व म हा न ना ॥ वा मी चि वे म वी नो दी च वि का ॐ

धनी त धा ॥ वा रा ही ना र सि ही च नि व दू ती च रु ४ ष ष्टि का ४ ॥ ॐ द द वी
महा या मी व लिं ग क लु भ म द ॥ को व रु ४ ष ष्टि या मि नी ला व लिं ग
दू र सु र्वे मी नि कू र २ म म सि दि कू र्व लु दू र दू ला ॥ ॐ ति च व म
धिया नि व लिं ॥ ॥ त ना म म य व लिं द दू ॥ ॐ दू म लि रु रु म म य म
हि न न व लिं द दू ॥ ॐ दू सु र्वे यी ल य यी भ नि द्वा ना य द्वा न भ व य ॥
कू ना य कू उ र्द द ४ सु र्व दि रु ग र्द मि ना ४ ॥ या गि ला या ग वी र द ४
सु र्वे न म मा ग मा ४ ॐ द य व महा च कृ षी ना थ व न दा म म थि र रु मा स र

दवीगुत्रयादावननना ॥ सर्वसिद्धिपसादाभदवीनवागवत्सया ॥ वी
नालाशगिनीनीचयदिषानिमहीतना ॥ ननगानवलिदवीसमया
वानमनक ॥ ५५ ॥ गिनीमन ॥ पृष्ठिमासमदाफिनीविर्ग ॥ निरुक्तयकु
दूहानाशगिनीगलसंकुला ॥ ५६ ॥ कडकादिकुसुमादिद्विभिर्नदलवित ॥
निरुक्तयकुदूहानाशगिनीगलसंकुला ॥ ५७ ॥ आकाशादिषूययीभक्तयशा
ना ॥ ५८ ॥ कीर्तिना ॥ आवधी ॥ ५९ ॥ दाद ॥ ६० ॥ विद ॥ ६१ ॥ महीयागन
वशा ॥ ६२ ॥ सर्वस्मानाकवव ॥ ६३ ॥ गिनीयागयूकालासमतिद्विनिमाव

का ॥ वीरकर्मसुवीरिन्दा ॥ ६४ ॥ मनिद्विनिद्विना ॥ ६५ ॥ ॥ द्वाययुगकावा
शासावका ॥ ६६ ॥ निगिनिगिनि ॥ ६७ ॥ नगनवाधवायमनामूठवावसिद्वि ॥
वापिकेयेकवृक्षवाग्मनानमानुसलुन ॥ ६८ ॥ नानावृयववानपिवठजा
विद्विनिनिचा ॥ ६९ ॥ नचसर्वयिमकुशावलिगृक्षकुसर्वने ॥ ७० ॥ गननौगनी
याहकनवीसर्वननलयेद ॥ ७१ ॥ ललद्वयमयाकर्मयल्लुविद्यमिप
लुने ॥ ७२ ॥ वलिपूष्यदाननसकुशाममचिकका ॥ ७३ ॥ सर्वकर्मालि
सिद्धानिसर्वदावयसाकुम ॥ ७४ ॥ निवसकियसदिनलीककावाकनना

ASHA J. JONES

2544

यास्वनभायनिमानकभावनद्वयकाव शुचिवसुला नियावना
दोषवर्त्तक यूजावना ॥ १॥ देवर्त्तक उत्तमानयाचक यशुश
नमूलि स्नात्तदिधूनक ॥ धारिवगजिनकमनवायात्त
दत्तदिदृष्टि जजमका मूडवान यष्टवदुमाधिव
नवनवायना दोषवर्त्तक यूजायाया ॥ उत्तर स्ववसु स्विं नय
दथुसुतान उत्तरवव वक्त्रिजवजवसु स्ववववसु ॥
यातामन अस्तुदववा याववाय रुना ॥ श्वानियाद्वव

न द्यायवत स्वर्त्तक श्वानिया ॥ चन्दनादि उत्तमका
स्नानचदुमाधिसकलिनन्दका स्विं नवनव ॥ धारवर्त्त
उवस्विया उत्तरवसु मन्त्र ॥ मानक वायाव ॥ सुगुनयुजा
तत्ति कथा ॥ भूयादि ॥ वाक् ॥ यजमानस्य सुमकनृका
घर्घनसिद्धि कामनार्थ ॥ नृद्युष्टवजिवसुक्ति लट्टान
पूजा महकविद्या ॥ ॥ सात्तगप्यगनदवचनक सा ॥

ॐ कूं कूं का नालम निरंजन यदुधनाय नमः ॥ जव गमै का ॥
ॐ कूं मूं मूं न निरंजन यदुधनालम नमः ॥ रव गमै का ॥
पुनः नाटव मूल मूल लोखान जय नयं कूं कूं या खनमा
मूल मादि ॥ दिवद कि ॥ देव कूं कूं तन ॥ धन गमयन तालध
नादि गमय वायं नूया नाहा ति स ल खन हाय कूं तन ॥ ख
सि क वाय ॥ कितं वाक्ता नादि घाघन विमर्क नयाय ॥

खदि काय पुनूया न काय ॥ ध ध खि व दू वि नारी स क ल्यं ला
य ॥ मूल दिव्या खन माय निरं घाघन लाय ॥ मूल मूल लो ॥ घा
घन न विवक ॥ वन्द लो दि गुरु श्या क आ गी वादि विय सकन
मं ॥ गमै लाय ॥ न्या ममै वलि विमर्क न ॥ समय विरा वय
न धिय ममै वि निया ल व मं नय ॥ आखा वया वय पुवा म नम
ल ल वाय क वाय ॥ मनाय ना गे खन यु जा ॥ मूख स्व म
या न जाय मुनि धून क वि नान क स्यं देव लाया व ॥ य

वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ वाचं धेनुमुपासीत ॥ शक्यं ॥ अशक्यं सकाशं समय
धेनूनां धियः ॥ न्यासास्तु नवलिखितं न ॥ सूर्यसाक्षि ॥ ॥
कुर्वन्नामस्तु ॥ मन्त्राकार्य ॥ द्याद्यल शाय ॥ ॥
श्रीनाट्यध्वरक्षध्वजिद्वयवाक् ॥ ॐ अथ ह्येतवान् कल्य व्या
दि ॥ ॐ नैजं ज्ञातुं नृपय ॥ ० महाद्वान् वाक्मन्त्रं लभते तं ॥ यथा
सर्वदवा मं कथ्यो ज्ञं तं दुर्लभं ॥ न क ॥ एतत्तु यथा विर्गुण
गोपीनामहोले मं ॥ ॥ व्योमिकं देवदेवा जगत्कविरु समाहि नं ॥

नरुर्लनउज्जालत्वीयतयगु गतपिस ॥ नरुत्तममहात्मा र्गं ॥ सूर्य
गानि विकाय मं ॥ सर्वयापविनिमर्कं ॥ सुवकासरुल्यदं ॥ धनधना
॥ पूगदिनो बल श्रीसुमंगलं ॥ नरुत्तुवक्तु तं नृत्तं ॥ यावत्सखाविधि
यग ॥ नावद्वयसह्यानि तं नृद्वयलोकयुन ॥ ॥ यजमानस्य ममक
काप्तनार्थं उ ॥ नृत्तं नमः ॥ ॥



८ म



संस्कृत

१ म



दम्

को मालि

यक्षवलि

वलि २ वा

चवलि

गोख

अर्धवार

अलवार

ॐ ह्रीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥
 नाट स्वयं युक्त विधि ध्याय ॥ शिव य यो न धर्म क ॥ ॐ नमः
 श्री ग १ शिव नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥ मनः शिव नमः नमः
 महा मासि मंस १ स्या मया पुत्र ॥ अश्विदि ॥ धी ३ नमः
 श्वर तद्वा नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥ वि
 नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥ नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥

द्वि. काम नार्थं शृङ्ग नृत्येऽथ नरतट्टारकस्य ऊर्ध्वर्षिकं साह
सुमूलमन्त्रेऽयमर्हक निष्ठा ॥ ॥००॥ निर्मलकल्प ॥ ॥

२ प्रसूतिदिना नदसिध धन

मन्त्रादि

सिद्धनारायण

वसिष्ठा ३

आलका

३२

भस्मान्नवन्धर

४४ (५५३५)

दशवर्ग

आनगि ३

चन्द्रिका

३३